• कविताएं...

अगर कभी दिन अच्छे आए

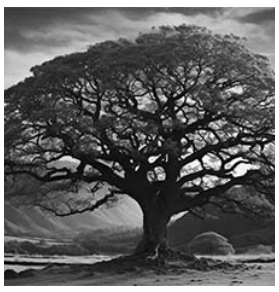

अगर कभी दिन अच्छे आए,
बात करेंगे मन की।
दिन भर कुंठा फिरे घूमती,
साथ लिए प्रत्याशा।
जाति-पाति के संग धर्म भी,
करता नित्य तमाशा।
दिन सनातनी रोंद रहे नित,
बातें अधुनातन की
बढ़ा रही हैं रक्तचाप को,
अब खबरें उन्मादी।
जीने का अभिशाप भोगती,
ये आधी आबादी।
आस्तीन में सांप करें अब,
बातें चंदन वन की।
वचन भंग हो फिरें निराद्दत,
जाने कितने वादे।
राजभवन में बसी झूठ अब,
सच के पहन लबादे।
नुची हुई कलियां भी गाएं,
महिमा अब उपवन की।

■ *राजपाल सिंह गुलिया*

ऐलान

हम क्यों चाहते हैं
हमारा बच्चा वही करे
जैसा हम चाहें
जीवन को हमारे अनुभवों से
समझे
ज़रा सोचिये
हमारी यह चहत
छीन लेती है बच्चे से उसकी
आज़ादी
नहीं घड़ने देती नये जीवन-मूल्य
कोल्हू के बैल सा वह
चलने को होता है विवश
रुका हुआ वहीं का वहीं
उतार दीजिए
उसकी आंखों से रूढ़ियों का
चश्मा
गिरता-पड़ता ढूंढ लेगा वह
अपनी दिशा।

■ *शशि सहगल*

• कहानी/-पद्मा सचदेव

हमवतन

गतांक से आगे...

मैंने पूछा, 'घर में कौन-कौन हैं?'

उसकी आँखें भर आई, फिर वह मुसकराकर बोला, 'सब कोई है। मेरी माँ, बापूजी, बड़ी भाभी, भाईजी और उनके बच्चे। वैसे तो गाँव में हर कोई अपना ही होता है।' फिर वह बोला, 'बोबोजी (बड़ी बहन), आप कहाँ की हैं?'

मैंने कहा, 'पुरमंडल की हूँ। नाम सुना है?'

वह उत्साह से बोला, 'मैं वहाँ शिवरात्रि में गया था। देविका में भी नहाया था। देविका को गुप्तगंगा कहते हैं न?'

मैंने मुसकराकर कहा, 'हाँ।'

फिर वह बोला, 'मैं अपनी भाभी को लिवाने गया था।'

मैंने पूछा, 'तुम्हारी भाभी कौन से मुहल्ले की है?'

उसने रस में डूबकर कहा, 'बोबो, मुहल्ला तो नहीं जानता, पर उसके घर अत्ती है। भाभी की छोटी बहन अत्ती। यह उसका नाम है।'

मैंने पूछा, 'यह क्या नाम हुआ, अत्ती?'

उसने मुसकराकर कहा, 'अति से बना होगा? वह काम अति में ही करती है। पानी भरने जाएगी तो 16 घड़े भर लाएगी। एक बार में दो घड़े उठाती है अत्ती।'

उसका चेहरा मुलायम हो आया। पूरे वजूद पर जैसे अत्ती छा गई।

मैंने उससे बड़े स्नेह से पूछा, 'तुम्हें अत्ती अच्छी लगती है न?'

वह शरमा गया।

मैंने मन के आकाश में सपने का एक गुब्बारा बनाकर छोड़ दिया। ऊपर, बहुत ऊपर। फिर सोचा, अपने गाँव में अत्ती को ढूँढ़ना कोई मुश्किल न होगा। ढूँढ़ ही लूँगी, पर किसके लिए?

वह कह रहा था, 'मेरी माँ रोज सवेरे मुझे किरड़ पिलाती थी। किरड़ जानती हो न?'

मैंने कहा, 'हाँ, जिस दही से मक्खन नहीं निकाला जाता, उस लस्सी को किरड़ कहते हैं।'

हम दोनों ही एक साथ बोलकर हँस पड़े।

मैं उसका हाथ सहला रही थी। वह कह रहा था, 'बोबोजी, मेरे बापू भी फौज में ही थे। लड़ाई में उनकी बाँह पर गोली लगी तो पेंशन पाकर घर आ गए। अब उनकी पेंशन और थोड़ी सी खेती से ही गुजारा होता है।'

मैंने पूछा, 'और तुम्हारा भाई?'

वह कहने लगा, 'भाई तो जम्मू-कश्मीर रूट पर बस चलाता है। कभी जम्मू, कभी कश्मीर। महीने में एक-दो दिन घर भी रहने आता है।'

मैंने कहा, 'फिर तो तुम उसके साथ बस पर खूब घूमते होगे?'

सिपाही का चेहरा और नरम हो गया। कहने लगा, 'कई बार भाई अपने साथ बस में ले जाता था। बटोत में हमारा ननिहाल हैं न! भापा मुझे वहीं छोड़ जाता था। आती बार वापस ले आता था। मेरे ननिहाल में मेरे मामा-मामी मुझे बड़ा प्यार करते हैं। उनके दड़ूनियों के बाग हैं। उनसे खट्टा अनारदाना बनता है। हम गरमियों में अनारदाने की चटनी पीसकर खीरे में भरकर खाते हैं।'

हम दोनों हँस पड़े।

मैंने पूछा, 'तुम फौज में कब से हो?'

बोला, 'यही कोई चार साल से। बापू तो चाहते थे, वहीं चनैनी में ही दुकानदारी करूँ। बापू को जब एकमुश्त

'क्यों नहीं आऊँगी, जरूर आऊँगी।' मैंने कहा। तभी मैंने देखा, उसके चेहरे पर दर्द की लहरें उठने लगी थीं। ज्वारभाटे के इंतजार में उसने दोनों हाथों से चारपाई की पाटी पकड़ ली। तभी डॉक्टर घबराया सा दाखिल हुआ।

उसे पता नहीं कैसे मालूम हो गया था। उसके साथ नर्स थी। डॉक्टर मुझे देखकर सुकून व इत्मीनान से बीमार के पास झुका और उससे बोला, 'देखा न, घर से भी कोई-न-कोई आ ही गया...

पैसा मिला तो उनकी यही मरजी थी, पर मैं अड़ गया। मैंने कहा, 'हमारे परिवार से हमेशा कोई-न-कोई फौज में जाता ही है। अब आप आ गए हैं तो मैं जाऊँगा।' यह कहकर वह मुसकराया, फिर बोला, 'आज या कल कोई घर से भी आ जाना चाहिए; पर आप तब भी आती रहना।'

'क्यों नहीं आऊँगी, जरूर आऊँगी।' मैंने कहा।

तभी मैंने देखा, उसके चेहरे पर दर्द की लहरें उठने लगी थीं। ज्वारभाटे के इंतजार में उसने दोनों हाथों से चारपाई की पाटी पकड़ ली। तभी डॉक्टर घबराया सा दाखिल हुआ। उसे पता नहीं कैसे मालूम हो गया था। उसके साथ नर्स थी। डॉक्टर मुझे देखकर सुकून व इत्मीनान से बीमार के पास झुका और उससे बोला, 'देखा न, घर से भी कोई-न-कोई आ ही गया। मैंने कहा था ना!'

सिपाही मुसकराया, फिर बोला, 'अभी मैं दर्द बरदाश्त कर सकता हूँ। बोबोजी भी यहीं हैं।'

डॉक्टर ने सवालिया निगाह से मुझे देखा। मैंने कहा, 'डॉक्टर साहब, डोगरी में बोबो बड़ी बहन को कहते हैं।' फिर सिपाही की ओर मुखातिब होकर उससे कहा, 'मैं तुम्हारी चनैनी भी हूँ। चिंता न करो। हमारा गाँव हमेशा हमारे साथ ही रहता है।' पता नहीं यह मैंने कैसे कह दिया। अपने गाँव के नाम से वह तड़पकर मुसकराया। मैंने उसका हाथ अपने हाथ में लेकर कहा-

'चन म्हाड़ा चढ़ेया ते लिशके बिच्च थालिया
चमकी चनैन मोड़ये दिक्ख रात्ती कालिया
मिलना जरूर मेरी जान हो।'

(मेरा चाँद थाली में चमक रहा है। देखो, चनैनी कस्बा काली रात में कैसे उज्वल होकर चाँद की तरह निकल आया है। मेरी जान, मिलना जरूर ।)

देखो, तुम्हारी चनैनी पर भी लोकगीत बना है।'

वह मुझे अविश्वास से देख रहा था। शायद वह सोच रहा था कि मैं चनैनी हूँ या नहीं। चनैनी उसका खूबसूरत कस्बा, उसका जन्म-स्थान, जहाँ काली रातों में चमकते राजाओं के सफेद महल हैं, जहाँ बहती नदी के पानी से झाँकते गोल-गोल पत्थर तारों की तरह जगमग करते हैं, जहाँ से श्रीनगर जाती बस की घुमावदार चाल को उसका कस्बा टुकुर-टुकुर ताकता रहता है, जैसे नंग-धड़ंग बच्चे हैरानी से बस की रोशनियाँ देखते हैं। डॉक्टर ने सिपाही को इंजेक्शन लगा दिया था। वह धीरे-धीरे नींद की गोद में जा रहा था।

डॉक्टर ने मेरे कंधे पर हाथ रखा। मैं रो रही थी। क्या ये टुकुर-टुकुर ताकती इसकी आँखें सचमुच में निश्चल हो जाएँगी? क्या यह अपनी जन्मभूमि के लिए तड़पनेवाला सिपाही यहाँ बंबई के किसी श्मशान घाट में राख हो जाएगा, या इसके घरवाले इसका शव चनैनी ले जाएँगे, कौन जाने? मैं तो यूँ ही लपेट में आ गई थी। डॉक्टर की आवाज से मैं चैतन्य हुई। मैंने अपने आँसू बह जाने दिए। डॉक्टर ने उन पर कोई ध्यान नहीं दिया। बाहर आकर मिन्नत से बोला, 'आप कल भी आएँगी न?'

मैंने कहा, 'हाँ।'

डॉक्टर ने कहा, 'आप कभी भी आइए, पर सुबह नाश्ते के वक्त यह थोड़ा चैतन्य रहता है।'

घर जाते समय मुझे लग रहा था, मेरा आत्मीय, मेरा अपना, मेरा वतनजाया यहाँ अकेला पड़ा है। मेरी तरह कई वापस जा रहे थे। कोई आशा के साथ, कोई दुविधा के साथ। सिपाही को डॉक्टर ने दो-तीन दिन से ज्यादा न दिए थे।

अगली सुबह मैं पहुँची तो वह नाश्ता कर चुका था। नर्स उसका मुँह पोंछ रही थी। छरों से भरे सिर पर सफेद कपड़ा कफन की तरह लिपटा हुआ था। उसने मुसकराकर मेरी ओर देखा तो वह मुझे किसी दरवेश की तरह लगा। दरवेश, जो अपनी जगह से निकलकर बाहर आ गया हो। नर्स ने आँखों-ही-आँखों में पूछा। मैंने कलाकंद का दोना उसकी तरफ कर दिया। नर्स भी मुसकराने लगी थी। उसने कलाकंद का दोना हाथ में लिया और सिपाही को खिलाने लगी। सिपाही ने काफी कलाकंद खा लिया तो कहा, 'सिस्टर, तुम भी खाओ न।' सिस्टर मुसकराती रही। सिपाही ने मुझे कहा, 'इस कलाकंद में मुझे उस गुड़ की बर्फी की याद आती है, जो हमारी चनैनी में दुर्गा हलवाई बनाता था।' इस बात पर हम तीनों हँसे तो हँसते ही चले गए। सिपाही के गले में जैसे कुछ फँसा। मैंने उसकी पीठ पर हाथ फेरा और नर्स उसे पानी पिलाने लगी। काफी देर में उसकी साँस सामान्य हुई। वह ठीक होते ही कहने लगा, 'बोबोजी, आज बड़ा आनंद आया। मुझे कलाकंद बड़ा प्रिय है।'

मुझे उस पर बड़ा प्यार आया। मैंने प्रसन्न होकर कहा, 'तुम कहो तो कल राजमा-चावल ले आऊँ?'

-जारी

• शायरी...

दुख का परबत जब भी मेरी राह में
लाया गया
देखते ही देखते उस पार मैं पाया गया।
भेज कर न्योता दुखों को सुख मुझे
मिलता है मित्र!
लो वह दुख आया, वह दुख आया, वह दुख
आया, गया!

◆ ◆ ◆

सुख का भी सिक्का वही और दुख का भी
सिक्का वही
बस इन्ही चित पट को ले कर यह है
ढलवाया गया।
दुख की निस्बत सुख बहुत ही कम है इस
संसार में
हो महाभारत कि रामायण, यही पाया गया।

◆ ◆ ◆

धन्य ऐ मेरे 'अरुण'! तू क्या निराला गीत है
सुख में भी गाया गया और दुख में भी
गाया गया।

-विजय 'अरुण'

• राह आसान हो गई होगी...

राह आसान हो गई होगी
जान पहचान हो गई होगी
मौत से तेरे दर्दमंदों की
मुश्किल आसान हो गई होगी
फिर पलट कर निगह नहीं आई
तुझ पे कुर्बान हो गई होगी
तेरी जुल्फों को छेड़ती थी सबा
खुद परेशान हो गई होगी
उन से भी छीन लोगे याद अपनी
जिन का ईमान हो गई होगी।

-सैफुद्दीन सैफ़